ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 45 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 अगस्त, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 श्रा. कृ.-10

श्रावणी पर्व के अवसर पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती भव्यता के साथ मनाने का लें संकल्प

- स्वामी आर्यवेश

श्रावणी पर्व आर्य समाज का मुख्य पर्व है, इसको धूमधाम से मनाने की आवश्यकता है जिससे आर्यों में उत्साह का जागरण हो सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष चल रहा है इसलिए श्रावणी पर्व के दौरान प्रत्येक सत्संगों एवं कार्यक्रमों में महर्षि दयानन्द जी से सम्बन्धित उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आमजन मानस को अवगत कराने का कार्य करें तथा अगले वर्ष मनाई जाने वाली 200वीं जयन्ती को अपने-अपने आर्य समाजों में धूमधाम से मनाने का संकल्प अभी से लें। वर्ष के दौरान महर्षि के विचारों को छोटे-छोटे टैक्ट एवं पम्पलेट आदि में प्रिन्ट कराकर वितरित करें और लोगों के घरों तक जाकर स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों से अवगत करायें।

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों की स्थापना आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 30 अगस्त, 2023 बुधवार को श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 7 सितम्बर, 2023 वृहस्पतिवार को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व के अवसर पर रक्षाबन्धन का त्यौहार भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक भाई अपनी बहनों की रक्षा का संकल्प लेता है। इसी प्रकार यज्ञोपवीत धारण करते समय भी संकल्प लिये जाते हैं। देखा जाये तो श्रावणी पर्व संकल्पों को धारण करने का पर्व है। इस बार का श्रावणी पर्व हम कुछ विशेष संकल्प लेकर मनायें। हम अपनी वैदिक संस्कृति को बचाने, सुरक्षित रखने, आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करें।

इस बार के श्रावणी पर्व को जहाँ हम पारम्परिक ढंग से उत्साह पूर्वक मनायें वहीं महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती को ध्यान में रखते हुए विशेष आयोजन करके महर्षि को श्रद्धांजलि देने का कार्य भी करें।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर, वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके समालोचना अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिए जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गम्भीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज में आमंत्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं। इस कार्य से देश में हो रहे धर्मान्तरण के कुचक्र को भी रोकने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि धर्मान्तरण की अधिकतम कार्यवाही समाज के इन वंचित और उपेक्षित वर्गों के भाई-बहनों पर ही की जाती है।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपने कार्यों से, चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मुहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेद की दृष्टि में 'राष्ट्र संकल्पना'

– डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

वेद सृष्टिविद्या का दूसरा नाम है। इन विद्याओं का अपरिमित विस्तार है। वेद विद्याओं का अपरिमित विस्तार मनुष्य जीवन के विभिन्न आयामों का स्पर्श करने वाला है। मानवीय जीवन से सम्बन्धित धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सिद्धान्तों और विश्वासों का आविर्भाव वेदों में देखने को मिलता है। इस दृष्टि से वेद भारतीय जीवन के मूल उत्स हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ में जब कभी मनुष्य हुआ, वह समय उसकी प्रथम अवस्था का रहा। कालचक्र की गति ने उसे मनुष्य समूह में परिवर्तित कर दिया। मनुष्य परिवार, समूह से ग्राम, प्रान्त और राष्ट्र तक पहुंच गया। इसके बाद का क्रम है- अनेक राष्ट्रों का संघ या विश्व संघटन। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह वैदिक चिन्तन है। यह प्रक्रिया क्षण में हुई, यह मानना कठिन है, आवश्यक समय जरूर लगा। समय के चक्र में ऋषियों का चिन्तन का क्रम भी विकसित हुआ यह निश्चित मात्र।

अथर्ववेद की ऋचा कहती हैः-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विद तपो दीक्षामुप निषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

अथर्व. 18.41.1

वैदिक आत्मज्ञानी ऋषि मुनियों ने मनुष्य जीवन के कल्याण के लिए अपने सम्मुख ध्येय को रखा, तप किया, दीक्षित हुए जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्र संकल्पना साकार हुई, जिसमें ओज, बल और प्राण है। 'राट्' इस शब्द से राष्ट्र शब्द बना। ब्राह्मण, संहिताओं में 'राष्ट्र संकल्पना' अधिक स्पष्ट हुई है- सार्वभौम राजा के अधीन जितनी भूमि है, वह राष्ट्र कहलाता है (तैत्तिरीय संहिता 7.5.19.1)। उत्तम राष्ट्र की संकल्पना और अधिक स्पष्ट होती है, इस सम्बन्ध में अथर्ववेद कहता है- पृथिवी, जन, संस्कृति मिलकर राष्ट्र बनता है। तेज और बल राष्ट्र भावना को पुष्ट करते हैं। (अथर्व. 12.3.10)

अपना शरीर एक राष्ट्र है, ऐसा यजुर्वेद मानता है। रुधिर, मांस, हड्डियां, कई कोश, अवयव, इन्द्रियां आदि का समुच्चय ही शरीर कहलाता है और एक तत्व है प्राण, जो शरीर को जीवन प्रदान करता है। इस शरीर की राष्ट्रदेह से तुलना की गई है, (यजु. 25.8) शरीर की इन्द्रियों के भोग चाहिए तभी वे कार्य करते हैं, कार्य करते हैं- तभी वे थक भी जाती हैं। ऐसा प्राण (आत्मा) का नहीं है। प्राण शरीर के रक्षण के लिए सदा विचरण करता है। विचरणमें वह कभी थकता नहीं, वैसे उसे विश्राम की आवश्यकता भी नहीं है। वैसा ही राष्ट्र का है। राष्ट्र के कई अंग हैं- मनुष्य, परिवार, ग्रम, प्रान्त और राष्ट्र। इसके साथ जुड़े हुए गृहप्रमुख, समूहप्रमुख, ग्रामप्रमुख, प्रान्तप्रमुख, राष्ट्रप्रमुख भी आये। उनका अपने-अपने स्तर का शासन प्रचलित हुआ। विभिन्न स्तरों पर कर्मचारी, अधिकारी, मन्त्री, मन्त्री-मण्डल, सभापति, राजप्रमुख, राष्ट्रप्रमुख भी जुड़ गये। यह राष्ट्र का पूर्ण स्वरूप है।

यजुर्वेद 'राष्ट्र एक देह है' इस संकल्पना को और अधिक स्पष्ट करता है। 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। मनुष्य देह और राष्ट्र देह को एक मानकर यह निर्देश दिया गया कि हम अपनी मातृभूमि को अपना देह मानें। देह के समान ही राष्ट्र की सुरक्षा करें (यजु. 25.9)। इस देह में सिर, बाहु, पेट और पांव ये चार अवयव हैं। उसी तरह राष्ट्र में ज्ञानी, वीर, व्यापारी और सेवा करने वाले कर्मचारी भी हैं। ये चार वर्ण कहलाए गए। ये चार वर्ण-गुण, कर्म, स्वभाव, योग्यता के अनुसार हैं। वेद का यह मौलिक चिन्तन, कालान्तर के पश्चात् जन्मगत बन गया है और अनेक जातियों का उदय हुआ। (यह एक अलग ही विषय है, इस लेख का प्रमुख अंग नहीं है)।

वेद उत्तम राष्ट्र की संकल्पना में पृथ्वी को प्रथम स्थान देते हैं। इस पृथ्वी का आधार क्या है? पृथ्वी किसने धारण की है? पौराणिकों के अनुसार पृथ्वी 'शेष' और 'उक्ष' पर आधारित है। उनकी दृष्टि में शेष सांप है और उक्ष बैल है। यह गलत धारणा है। 'शेष' का वैदिक अर्थ है- परमात्मा। सृष्टि के प्रलय के बाद भी वह 'शेष' रह जाता है। इस अर्थ में पृथ्वी 'शेष' है। 'उक्ष' का अर्थ है- सूर्य का पृथ्वी द्वारा सेचन। राष्ट्र की धारणा में पृथ्वी महत्व रखती है। पृथ्वी को सेचन समृद्ध करने की भावना भी उतनी ही महत्व की है। 'भूमे मातः' (अथर्व. 12.163), 'माताभूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' (अथर्व. 12.1.12)। वेद की ऋचाएं कहती हैं- भूमि मेरी माता, हम उसके पुत्र हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि सर्वत्र मातृभूमि के यश की रक्षा करें। 'पृश्निमातरः मर्त्तासः .... स्तोता वो अमृतः स्यात्' (ऋ. 1.38.4) मातृभूमि को अपनी माता मानने वाला स्तोता अमर हो जाता है। 'इला सरस्वती मही तिस्रो देवी मयोभवः' मातृभूमि, मातृसंस्कृति, मातृभाव ये तीन देवियां हैं, जिनके अस्तित्व से ही राष्ट्र का निर्माण होता है, उत्कृष्ट और उन्नत होता है (ऋ. 1.13.9)।

वेद की दृष्टि में राष्ट्र और उसके स्वराज्य, सुराज्य के लिए 'संगठन' यह महत्वपूर्ण प्रथम कसौटी है। 'यदजः प्रथमं सम्बभूव स ह तत्स्वराज्यमियाय। यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्' (अथर्व. 10.7.31) देशवासियों के संगठित हुए बिना राष्ट्रीय भावना पनप ही नहीं सकती और न राष्ट्र सुदृढ़-बलशाली ही बन सकता है। ऋग्वेद संगठन को अधिक स्पष्ट करते हुए कहता है- 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' 'प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभीज्ञानी बनो।'

'समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्' हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।'

'समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः' 'हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।'

ऋग्वेद आगे कहता है हाथ की उंगलियां सरीके न होते हुए भी, एक होकर कार्य करती हैं, उसी तरह राष्ट्र की प्रजा छोटी-बड़ी होने पर भी एक होकर राष्ट्र के हितकारी कार्यों के लिए एक मन वाली हो (ऋ. 1. 62.10)। संगठन वह शक्ति है जिससे सबका, राष्ट्र का भला हो जाता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

बलशाली राष्ट्र की भावनाएं देशवासियों में जगाने के लिए वैदिक ऋषियों ने राष्ट्रीय प्रार्थना का सूत्रपात भी किया था। यह राष्ट्रीय प्रार्थना उनकी महान् राष्ट्रीय भावना का द्योतक है। राष्ट्र भक्ति, स्वराज्य की भावना, स्वाधीनता की आकांक्षा यजुर्वेद में अभिव्यक्त हुई है। राष्ट्र में द्विज ब्रह्मतेजधारी ब्राह्मण हों, अरिदल का विनाश करने वाले क्षत्रिय हों, दुधारु गौवें हों, पशु हों, पृथ्वी फल-फूल से लदी हों, अमोघ औषधियां हों, इच्छानुसार वर्षा हो, वह ताप धोने वाली हो, सुभगा नारी हों, पुत्र यजमान हों, इन सभी से युक्त हमारे राष्ट्र का सुराज्य हो (यजु. 22.11)।

राष्ट्र का नेता कैसा हो? राष्ट्र के नेता उस राष्ट्र के प्राण स्वरूप होते हैं। उत्तम नेता के कारण ही राष्ट्र जागृत रहता है। उत्तम नेता के अभाव में राष्ट्र दिशाहीन हो जाता है। ऋगवेद कहता है- ध्युमिः जायसे (ते) नेता तेजों से उत्पन्न हों, 'अदाभ्य' न दबने वाला, कोई शत्रु उसे भयभीत कर नहीं पाता, 'पोत्रं तव' राष्ट्र में पवित्रता रखने वाला हो 'सतां वृषभः इन्द्र' वह सज्जनों की कामनाओं का पूरक हो तथा स्वयं भी ऐश्वर्यवान् हो, 'पुरन्ध्या सचते' उत्तम बुद्धि वाला हो, 'धृतव्रतः वरुण' व्रतों, नियमों को धारण करने वाला हो, 'बाहुभिः वाजी अरुषा रोचते' अपनी भुजाओं से बलवान् हो, तेजस्वी हो, राष्ट्र का संचालक हो।

प्राचीन काल में अपना देश आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था। तत्पश्चात भारत हुआ। ग्रीकों ने इन्डस कहा। अरबों ने इसे हिन्दुस्थान बना दिया। ब्रिटिशों ने इण्डिया नाम रखा। स्वतन्त्रता के पश्चात् इस राष्ट्र ने भारत नाम धारण किया। भारत के संविधान की दृष्टि से हमारा राष्ट्र भारत है, हमारी संस्कृति भारतीय है और भाषा भी भारतीय है और हम सब भारतवासी भारतीय हैं। वैदिक ऋषियों की दृष्टि से भारत राष्ट्र की संकल्पना कुछ और ही है। वेद कहते हैं- 'आ नो यज्ञं भारती' (ऋ. 10.110.8)। महर्षि यास्क अपने 'निरुक्त' में कहते हैं- 'भरत आदित्य-स्तस्य भाः' इन सूत्रों में भरत, भारती शब्द प्रयुक्त हुए हैं वे आलोक के अर्थ में हैं। भरत का अर्थ सूर्य या आदित्य है। 'भरत', 'भारती' में जो 'भा' है- वह रोशनी के अर्थ में है। इस दृष्टि से भारत का अर्थ हुआ-सूर्य का आलोक, ज्ञान का आलोक यह भारत है। यही हमारी भारतीय संस्कृति है। अपने राष्ट्र के लिए इसी शब्द का प्रयोग हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों, आचार्यों ने किया है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि भरत राजा के नाम से अपने राष्ट्र का नाम भारत पड़ा यह गलत धारणा है।

भारत जैसी कोई भौगोलिक सत्ता नहीं है और न कोई जनसमष्टि है, जो अचानक पृथ्वी के किसी अंश में आकर पड़ी हो या पृथ्वी के किसी प्रान्त में पड़ी रह सकती हो। भारत यह ज्ञान का प्रतीक है। ऐसे राष्ट्र के सम्बन्ध में मनु महाराज ने कहा-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वंस्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

इस राष्ट्र में जन्म लेने वाले हमारे पूर्वजों ने ही सारे संसार को बसाया और उसे शिक्षित कर, सभ्य बनाकर, रहन-सहन तथा आचार-विचार की शिक्षा दी। राष्ट्र संकल्पना का यह प्राचीन दृष्टिकोण रहा है। इस प्रकार न केवल राष्ट्र की संकल्पना अपितु संकल्पानुसार अपना 'आर्यावर्त' भी रहा है। वेद का यह अनोखा चिन्तन रहा है। संसार का कोई ग्रन्थ या कोई संस्कृति राष्ट्र, स्वाधीनता का इतना चिन्तन नहीं कर सकी, जितना वेद और प्राचीन संस्कृति ने किया है।

अपना यह राष्ट्र किसी समय, जिसे विश्वगुरु के नाम से अभिहित किया जाता रहा, दूध की नदियां बहती थीं, हर डाल पर सोने की चिड़ियां चहकती थीं, धरती हीरे-मोतियों से भरी थी, ज्ञान की गंगा सदा बहती थी। ब्रह्मशक्ति, छात्रशक्ति, अर्थशक्ति, श्रमशक्ति ये राष्ट्र के साथ थे। 'जननी' जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' - यह स्वरूप था इस राष्ट्र का। काल के कुटिल चक्र ने 'राष्ट्र संकल्पना' को ही परिवर्तित कर दिया। राष्ट्र संकल्पना में जो वैदिक सिद्धान्त और विधान थे, वे राष्ट्र से विलग होते गए। राष्ट्र संकल्प एक विधान राष्ट्रदेह से निकल गया, दूसरा निकला, तीसरा निकला राष्ट्र प्राणहीन हुआ। इस सिलसिले का प्रारम्भ महाभारत के युद्ध के पूर्व से ही हुआ, महाभारत के युद्ध ने राष्ट्र की संकल्पना को तहस-नहस कर दिया। सर्वत्र विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। एक राष्ट्र अनेक हिस्सों में बंट गया। हर हिस्से का एक प्रत्याशी, शासक हुआ। सीमित दायरा राष्ट्र बना। हर हिस्सा-दूसरे हिस्से से ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, विरोध-प्रतिरोध करने में लगा रहा। अभ्युदय, निःश्रेयस के स्थान पर विनाश, राष्ट्र का सर्वनाश चहुंमुखी पतन का प्रारम्भ हुआ। राष्ट्र में अनेक धर्म, मत, सम्प्रदाय प्रचलित हुए। इनका अपना-अपना पुरोधा भी बना। राष्ट्र के आधार-स्तम्भ वर्ण, जातियों में बदल गए। सर्वत्र विभिन्नता राष्ट्र का अंग बन गयी। राष्ट्र की आदर्श आत्मा का नाश होकर, वह मात्र कंकाल रह गया।

ऐसे कंकाल राष्ट्र को आचार्यचाणक्य जैसा राष्ट्रपुरुष भी मिला, जिसने राष्ट्र में प्राण फूँकने का भरसक प्रयास किया। यह प्रयत्न अल्पकालीन सिद्ध हुआ। 'भूमि मेरी माता है, मैं मातृभूमि का पुत्र हूँ, 'उपसर्प मातरं भूमिम्' 'मातृभूमि की सेवा कर', 'यतेमहि स्वराज्ये' हम स्वराज्य के लिए सदा प्रयत्न करते रहें, वेद की यह राष्ट्र संकल्पना-अर्थहीन सिद्ध हुई। परिणामतः इस राष्ट्र में ग्रीक, शक, कुषाण, हूण, गुर्जर, यवन और अन्य विदेशी आये। वेद के सन्देश को अपना राष्ट्र भूल गया। शत्रुभाव रखने वालों का प्रवेश राष्ट्र में सजगतापूर्वक वर्जित करना चाहिए। राष्ट्रद्रोही ही राक्षस हैं। ऐसे राक्षसों का सिर काटना चाहिए (यजु. 5.22)। राष्ट्र में बिखरे हुए शासकों की असंख्य त्रुटियां आपस का मतभेद, ईर्श्या-द्वेष राष्ट्रीय भावना का अभाव, आदि कुप्रवृत्तियां-मुगलों के दीर्घ शासन का कारण बनीं। राष्ट्र वेद के स्वधा शब्द को भूल गया। स्वधा का अर्थ है-स्वकीय धारक शक्ति, जिसके द्वारा अपने शरीर, समाज, राष्ट्र तथा अखिल विश्व को धारण किया जा सकता है (यजु. 1.22)। 'राष्ट्र स्वधा' के लिए युद्ध करने पड़ते हैं।

पराधीनता जब राष्ट्रीय मानस को असह्य होती है, तो मानस के गर्भ में पुनः राष्ट्र स्वा-धीनता की चिनगारियां सुलगने लगती हैं। अपने राष्ट्र मानस का कुछ ऐसा ही हुआ। वह सदियों की दास्य श्रृंखला से मुक्त हुआ। स्वाधीनता का सूर्यअन्धकार के गर्भ को चीरकर पुनः उदित हुआ। यह सिद्ध हुआ कि राष्ट्र की भौमिक स्वाधीनता अक्षुण्ण नहीं है, परन्तु आत्मिक स्वाधीनता अक्षुण्ण रहती है। आत्मिक स्वाधीनता के कारण ही राष्ट्रीय भौमिक स्वाधीनता पुनः प्राप्त की जा सकती है। उसकी मूल जड़ें त्याग में हैं। हमारे राष्ट्र ने बहुत कुछ त्याग किया तब कहीं स्वाधीनता प्राप्त हुई।

इधर ऐसा कुछ दिखने लगा है कि राष्ट्र के इर्द-गिर्द काली घटाएं छा रही हैं। राष्ट्र के अभिन्न अंगों से छेड़छाड़ कर राष्ट्र से विलग करने में विदेशी शक्तियां लगी हैं। ऐसी स्थिति में वेद का संदेश भूलना नहीं चाहिए। राष्ट्र के लिए स्वाधीनता सर्वोपरि है, उसे बचाए रखना चाहिए 'आरोहणाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्' (अथर्व. 5.30.7)। यह सच है कि राष्ट्र के सैनिक युद्धभूमि में जीत जाते हैं, दूसरी ओर राष्ट्र के नेता को कभी क्षमा नहीं करते। वेद कहते हैं-वज्रधारी बनकर हर क्षेत्र में शत्रु को परास्त करो। संसद पर हमला करने वाले शत्रु मंदिरों पर हमला करने वाले शत्रु, बाजारों में विस्फोट करने वाले शत्रु, विमान-अपहरण करने वाले शत्रु का नाश करना चाहिए। यह राष्ट्र का परम कर्तव्य है। 'लोकल' से ग्लोबल' तक पहुंचे हुए आतंकवाद को समाप्त करना राष्ट्र धर्म है। 'वोट बैंक' के लिए तुष्टीकरण की भावना का त्याग राष्ट्र के लिए सर्वोपरि है। वर्तमान राष्ट्र की घोषणा है- इस सदी का राष्ट्र विश्व में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगा। इसके लिए एक ही रास्ता है- शक्तिशाली संगठन। भारत के पुत्र शत्रु को क्षीण करना ही जानते हैं, राष्ट्र समृद्धि- यह राष्ट्र की धारणा है।

'भरतस्य पुत्रः अपपित्वं चिकितुः नः प्रपित्वम्।

11 भोसले इलायट, भोसले नगर, पुणे

सामाजिक समरसता की खोज

– डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

आज हम मूल्यों के दोराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता भारतीय चिरंतन मूल्यों का है जो कि हमें अब अप्रासंगिक दिखाई पड़ता है, लेकिन पूर्णतया त्याज्य भी नहीं प्रतीत होता। दूसरा रास्ता आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति का है। जिसकी ओर हम दिन-प्रतिदिन लालायित होकर बढ़ते चले जा रहे हैं। इन दोनों दृष्टियों या संस्कृतियों के जीवन मूल्यों में धरती और आकाश का अन्तराल है। एक अपनाव है तो दूसरे में तनाव है। एक में सहकार है तो दूसरे में संघर्ष है। एक में स्नेह है तो दूसरे में स्वार्थ है। एक में ममता है तो दूसरे में ममता की दुहाई है। आज का सामाजिक संघर्ष केवल व्यक्तियों-व्यक्तियों का संघर्ष न होकर दो विरोधी व्यवस्थाओं या विचारधाराओं का संघर्ष है। अब देखना यह है कि मानव कौन से पथ को अपनाता है। एक में शांति और संतोष है तो दूसरे में विग्रह और संघर्ष है हमारा विश्वास यही है कि मनुष्य मूलतः शांतिकामी है। संघर्ष उसकी विवशता हो सकता है कामना नहीं। अतएव देर-सवेर वह प्रथम पथ का ही वरण करेगा और अपने जीवन को समरस बनायेगा।

आज अनास्था का युग है। पहले आस्थाओं का युग था। तब हमारी समाज में आस्था थी, उसकी मान्यताओं और परम्पराओं में आस्था थी। उससे बढ़कर शास्त्र में आस्था थी। सबसे बढ़कर ईश्वर में आस्था थी। अतएव समाज और व्यक्ति आस्था और विश्वास के बल पर चल रहे थे। ऐसा नहीं था कि उस पुराने समय के समाज में समस्याएं नहीं थीं। समस्याएं थीं लेकिन उनके समाधान भी उपस्थितथे। वह चाहे शास्त्रोक्त कथन रहे हों या बुजुर्गों की समझदारी याअपने भाग्य का भरोसा- इन सब चीजों के सहारे व्यक्ति, परिवार और समाज की सारी समस्याएं हल हो जाती थी। अब ऐसा कोई आधार हमारे पास नहीं रह गया है, जिसके सहारे सामाजिक संघर्ष को टाला जा सके। पहले चाहे शारीरिक संघर्ष आज से कहीं ज्यादा था, लेकिन मानसिक संघर्ष इतना प्रबल तब नहीं था। भौतिक दृष्टि से पहले का समाज चाहे जितना विपन्न था, लेकिन मानसिक दृष्टि से वह पर्याप्त समरस था। बेशक उस समाज में शोषण का बेरोकटोक चक्र चलता था। बेकारी थी- भूख थी- सब कुछ था तथापि व्यक्ति-व्यक्ति में, वर्ग-वर्ग में, जाति-जाति में एक प्रकार का सामंजस्य स्थापित था। हमारा लक्ष्य यह बिल्कुल नहीं है कि शोषण और उत्पीड़न को अनदेखा करके समाज में सामंजस्य स्थापित हो। ऐसा सामंजस्य तो समाज की अधिक से अधिक समता पर ही आधारित हो सकता है।

हमारे आज के संघर्ष या अनास्था और अविश्वास का मूल कारण क्या है? यह जानने की बात है। अब हमारे जीवन के मान-मूल्य बदल रहे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति त्यागमूलक थी। अतएव तब त्याग पर जोर था।समाज में जो भौतिक सुख सुविधाओं का जितना ज्यादा त्याग करता था वह उतना ही सम्मान का भाजन होता था। उदाहरण के लिए संन्यासी या ब्राह्मण पवर्ग को ले सकते हैं। समाज में यदि उनको सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था तो वह केवल उनके त्याग के ही कारण था। उस समाज में विद्या-विवेक का भी अपना महत्व था। विद्या को सबसे बड़ा धन उस जमाने में माना जाता था। कहा जाता था कि ''विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्'' अर्थात् विद्या ही सबसे बड़ा धन है। विद्या से जो विवेक (समझदारी) जाग्रत होती है वह भी पुराने जमाने में बहुत बड़ी बात थी। इनके अतिरिक्त सहनशीलता का बड़ा महत्व था। उसी को क्षमाशीलता या तपस्या कहा जाता था। उदाहरण के साथ दूसरे के अभ्युदय या अपराध को सहन करना बहुत बड़ी तपस्या समझी जाती थी।बलवान और वीर पुरुषों के लिए भी क्षमा भूषण स्वरूप थी। विनयशीलता का पुराने जमाने का अपना बहुत बड़ा मूल्य था। जो व्यक्ति जितना अधिक विनयशील होता था वह उतना ही महान और समझदार समझा जाता था। घर-परिवार, जाति और बिरादरी में लोग उसी व्यक्ति का सम्मान करते थे जो सबको उचित सम्मान देता था। इसी को शील और शिष्टाचार कहा जाता था। पुराने जमाने में आचरण की शुद्धता या पवित्रता भी बहुत बड़ी बात थी। तब किसी भी सभ्य व्यक्ति में इन सभी गुणों का होना अनिवार्य था। सादगी पुराने युग का श्रृंगार था। तन और मन की सरलता अपने आप में देखते ही बनती थी। एक व्यक्ति को दूसरे के कथन पर पूरा-पूरा विश्वास रहता था। तब लोग अपने कथन और वचन का मूल्य भी मानते थे। जिस समाज के जीवन मूल्य इतने उच्च और उदार हों, उस समाज में समरसता अवश्यम्भावी थी। यहां पर संघर्ष और तनाव का अवसर कम से कम था।

आज स्थिति बहुत बदल गयी है। पहले व्यक्ति जहां पर विनय सम्पन्न होता था, आज का व्यक्ति अहमन्य हो चला है। वह विनय और शिष्टाचार को आत्महीनता का पर्याय मान बैठा है। भौतिक समृद्धि ने उसके अहं को उन्नत कर दिया है। सहनशीलता या क्षमाशीलता को वह अपनी सबलता न मानकर दुर्बलता मानता है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। आचार-विचार का कोई मापदण्ड ही अब नहीं रह गया है। जिसको जो अच्छा लगता है, वह वही करता है। उचित-अनुचित, पाप-पुण्य, अच्छाई-बुराई का सब विवेक मोथरा हो गया है। मन-वाणी की सरलता अब मूर्खता या गंवारपन है। सभ्यता की पहचान तो यह है कि चाहे आपके मन में कुछ भी क्यों न हो लेकिन उसे मुख पर न लाइये। पहले का व्यक्ति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करके निर्विकार हो जाता था लेकिन अब का आदमी तो इतना व्यक्तिगत हो गया है कि वह अपने हर सुख-दुःख को गोपनीय समझता है। तभी कुण्ठित रहता है। दूसरे का मान-सम्मान करना आजकल अपने स्वाभिमान के विरूद्ध समझा जाता है। सादगी अब श्रृंगार नहीं अब तो वह अंगार है। यदि कोई व्यक्ति सादा रहता है तो यह उसकी सज्जनता नहीं अपितु या तो निर्धनता है या कृपणता है या फिर असभ्यता है। आज व्यक्ति स्वयं में इतना सम्पूर्ण हो गया है कि वह दूसरों के साथ उठना-बैठना हिलना-मिलना अपनी शान के विरूद्ध समझता है। पहले व्यक्ति समाज में स्वयं को अपूर्ण समझता था इसीलिए वह दूसरों की अपेक्षा का अनुभव करता था। लेकिन आज का व्यक्ति तो स्वयं को सभी भांति सर्वतन्त्र और स्वावलम्बी मानता है दूसरों के यहां आना-जाना, सुख-दुःख की बातें करना उसकी अहमन्यता को ठेस पहुंचाती है। आज उसकी अस्मिता इतनी अतुंग हो चुकी है कि उसके सामने सारा ही समाज बौना नजर आने लगा है। एक ओर उसका व्यक्तिगत हित-अहित है तो दूसरी ओर सारे समाज का अस्तित्व। पहले का व्यक्ति यह सोचता था कि मैं समाज के लिए क्या कर सकता हूँ, उसे क्या दे सकता हूँ। आज का व्यक्ति तो केवल लेने की बात सोचता है देने की नहीं। इसीलिए सुख-सुविधाओं और अधिकारों की एक अन्धी दौड़ लगी हुई है। पहले जीवन में सन्तोष और समर्पण होता था। जो कुछ प्रयत्न पूर्वक सहज सुलभ होता था पहले का व्यक्ति उसी में संतुष्ट होकर अपने कर्म के प्रति समर्पित होता था। वह उसी को धर्म मानता था। उसमें घाटा उठाकर भी वह स्वयं को लाभान्वित मानता था। तभी तो गीता में श्रीकृष्ण ने कहा था कि स्वधर्मे निधन श्रेय पर धर्मो भयावहः।'' अपने कर्तव्य-पालन के लिए मृत्यु भी वरेण्य है उससे विचलित या पथभ्रष्ट होकर जीना भी मरण के समान है।'' पर आज हमारे अन्दर वह कर्तव्य निष्ठा कहां? वह सुख और शांति कहां है? कहां गया वह संतोष का परम धन? कहां गया अमृत तुल्य स्नेह सम्बन्ध।

आजकल कोई भी व्यक्ति अपने निर्धारित कर्म या व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं है। वह चाहे किसी भी पेशे का व्यक्ति हो और तो क्या अध्यापक वर्ग भी जो ब्राह्मण वर्ग के अन्तर्गत आता है, आज व्यवसायी हो चला है। उसका उद्देश्य भी मात्र धनार्जन बन गया है। दूसरे व्यवसायों की तो बात ही क्या है। हर व्यक्ति आज आपको प्रापर्टी डीलर मिलेगा, या बीमा-कम्पनी का एजेन्ट या पुलिस का दलाल या इसे और भी सभ्य ढंग से कहा जाये तो राजनैतिक मिलेगा। सर्वतोभावेन समर्पित होकर जीवन की कोई सृजनात्मक दिशा अब नहीं है। जीवन का कोई सुनिश्चित उद्देश्य नहीं है। कोई दिशा और दृष्टि नहीं है। जीवन में खाली आर्थिक घुड़दौड़ शेष रह गयी है। ऐसे में क्या पाप-पुण्य होगा, क्या उचित-अनुचित होगा। कहां धैर्य ओर सन्तोष होगा? कहां क्षीरोज्ज्वल क्षमाशीलता और सहनशीलता होगी? तब व्यक्ति-व्यक्ति या जाति-जाति के सम्बन्ध कैसे मधुर रह सकते हैं। ऐसे समाज में स्नेह और शांति कैसे हो सकती है। संघर्ष और तनाव ही इस समाज की नियति रहेगी। आस्था और विश्वास के स्थान पर तर्क और आलोचना ही व्यक्ति के सम्बल होंगे। वह बजाय कुछ करने के कहने में अब विश्वास रखता है। साहित्याचार्यों ने काव्य में नवरसों का विधान किया था। शायद दृष्टि आलोचना रस पर नहीं पड़ी थी। यह काव्य और साहित्य का अभिनव रस है। और इसी रस में आज लोकरूचि है। शेष रस तो अब केवल साहित्य समीक्षा तक ही सिमटकर रह गये हैं जो व्यक्ति स्वयं कर्मण्य होता है उसे आलोचना में नहीं सृजन में आनन्द मिलताहै। उत्तम सृजन स्वयं में सर्वश्रेष्ठ आलोचना है।

यह बात ठीक है कि समाज में आस्था और विश्वास के मान-बिन्दुओं का ह्रास हुआ है। लेकिन वह इस सीमा तक तो अभी नहीं हुआ है कि उनका नाम ही निःशेष हो जाये। आज व्यक्ति के अपने अन्तर का स्रोत ही सूख गया है। जिस अतल जल से भक्ति और आस्था तथा सृजन की जलधाराएं प्रवाहित होती हैं वह सरस हृदय तो आज मरुस्थल बन गया है। उसमें अब सुशीतल जल नहीं केवल मृगमरीचिका का विभ्रम है। आस्था और विश्वास जहां पर व्यक्ति के व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, वहीं पर सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी वे हितकर हैं। आज हम मूल्यों के दोराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता भारतीय चिरंतन मूल्यों का है जो कि हमें अब अप्रासंगिक दिखाई पड़ता है, लेकिन पूर्णतया त्याज्य भी नहीं प्रतीत होता। दूसरा रास्ता आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति का है। जिसकी ओर हम दिन-प्रतिदिन लालायित होकर बढ़ते चले जा रहे हैं। इन दोनों दृष्टियों या संस्कृतियों के जीवन मूल्यों में धरती और आकाश का अन्तराल है। एक अपनाव है तो दूसरे में तनाव है। एक में सहकार है तो दूसरे में संघर्ष है। एक में स्नेह है तो दूसरे में स्वार्थ है। एक में ममता है तो दूसरे में ममता की दुहाई है। आज का सामाजिक संघर्ष केवल व्यक्तियों-व्यक्तियों का संघर्ष न होकर दो विरोधी व्यवस्थाओं या विचारधाराओं का संघर्ष है। अब देखना यह है कि मानव कौन से पथ को अपनाता है। एक में शांति और संतोष है तो दूसरे में विग्रह और संघर्ष है हमारा विश्वास यही है कि मनुष्य मूलतः शांतिकामी है। संघर्ष उसकी विवशता हो सकता है कामना नहीं। अतएव देर-सवेर वह प्रथम पथ का ही वरण करेगा और अपने जीवन को समरस बनायेगा।

आर्य नेता अनिल आर्य की समस्त आर्य जगत से अपीलः—

श्रावणी पर्व पर युवा संस्कार अभियान चलायें और मिशन-25

यानि 12 से 25 वर्ष तक के युवाओं को जोड़ने के लिये यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ–साथ यज्ञोपवीत संस्कार करवायें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यक्रम अपने निकट वाले में सम्मिलित हों

1. शनिवार, 12 अगस्त 2023, प्रातः 8.30 बजे,आर्य समाज,गुड़मण्डी,उत्तरी दिल्ली, संयोजकः वीरेन्द्र आहुजा–9910715716
2. शनिवार, 12 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे,टी.पी.डी.डी.एल.सेन्टर,पी–4, जगदम्बा मार्केट, सुलतानपुरी, उत्तर पष्चिमी दिल्ली, संयोजकः राधा भारद्वाज–9868026472
3. शनिवार, 12 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, डी.ए.वी.गर्ल्स हाई स्कुल, कर्णताल, करनाल, हरियाणा, संयोजकः स्वतन्त्र कुकरेजा– 9813041360
4. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज, हापुड़, उ.प्र, संयोजकः आनन्दप्रकाष आर्य–9837086799
5. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, महावीर नगर, पष्चिमी दिल्ली, संयोजकः दिनेष आर्य–9213637558
6. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, समर्पण शोघ संस्थान, सेक्टर–5, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, संयोजकः सुरेष आर्य–9810189585
7. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, वजीरपुर, जे.जे कालोनी, उत्तरी दिल्ली, संयोजकः सन्तोष शास्त्री–9868754140
8. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8.15 बजे, आर्य समाज,नगर शाहदरा,पूर्वी दिल्ली, संयोजकः राजीव कोहली–8700739759.
9. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे,आर्य समाज, सन्देष विहार, उत्तर पष्चिमी दिल्ली, संयोजकः विजेन्द्र आनन्द–9810024099
10. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, मानव निर्माण केन्द्र, नांगलोई विस्तार, पष्चिमी दिल्ली, संयोजकः भोपाल सिंह आर्य–9650781166
11. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, आर्य समाज, नरेला, दिल्ली देहात, संयोजकः एस.पी.जूनः 9999180615
12. रविवार, 13 अगस्त 2023, सायं 3 बजे, डी–1/330, गली–3, एम.आई.जी.फलेट, अषोक नगर, पूर्वी दिल्ली, संयोजकः सोनिया सन्जु–9643875121.
13. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, ग्राम वहरावद, अलीगढ़,उ.प्र.संयोजकः कमल आर्य–8130204904
14. रविवार, 13 अगस्त 2023,प्रातः 9 बजे,के.वी.स्कुल, अन्तालब, जम्मू,संयोजकः कपिल बब्बर–9906232397
15. रविवार, 13 अगस्त 2023,प्रातः 8 बजे,आर्य समाज,आनन्द विहार,पूर्वी दिल्ली
16. रविवार, 13 अगस्त 2023,प्रातः 8 बजे,आर्य समाज, बैंक एनक्लेव,पूर्वी दिल्ली, संयोजकः जगदीष पाहुजाः 9811557691
17. सोमवार, 14 अगस्त 2023,प्रातः 8 बजे,आर्य समाज,राम विहार, लोनी, उ.प्र. संयोजकः विनोद आर्य–7827867059
18. सोमवार, 14 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, महाराण प्रताप आई.टी.आई, घेसपुर, यमुना नगर, हरियाणा, संयोजकः सौरभ आर्य– 9813739000
19. मंगलवार, 15 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, कबीर बस्ती, उत्तरी दिल्ली, संयोजकः रामचन्द्र सिंहः 9289357210
20. मंगलवार, 15 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, मकान न. 16, सैनिक एनक्लेव विस्तार, सेक्टर–3, तिरंगा चौक, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, पश्चिमी दिल्ली, संयोजकः मानवेन्द्र शास्त्री–9213326949
21. मंगलवार, 15 अगस्त 2023,सायं 3 बजे,आर्य समाज, सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली, संयोजकः सुदेषवीर आर्या–9717078490
22. बुधवार, 16 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, माडल टाउन, सोनीपत, हरियाणा, संयोजकः अर्जुनदेव दुरेजा–9896677667
23. बुधवार, 16 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, श्रद्धा मन्दिर स्कुल, सेक्टर–87, फरीदाबाद, हरियाणा, संयोजकःडा.गजराजसिंह आर्य–9213771515.
24. वीरवार, 17 अगस्त 2023, प्रातःः10 बजे, विजय हाई स्कुल, सिक्का कालोनी, सोनीपत, हरियाणा, संयोजकः जितेन्द्र चावला–9812554123.
25. शुक्रवार, 18 अगस्त 2023, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज,उत्तम नगर, पष्चिमी दिल्ली,संयोजकः अमरसिंह आर्य–9312857709
26. शुक्रवार, 18 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, कमला नेहरू पब्लिक स्कुल, संजय कालोनी, फरीदाबाद, संयोजकः ज्योति आर्या–9818699097.
27. शनिवार, 19 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, वी.टी.सेन्टर, टी.पी.डी.डी.एल, ग्राम जौन्ती, दिल्ली देहातः संयोजकः दषरथ भारद्वाज–9250601783.
28. शनिवार, 19 अगस्त 2023, षाम 5 बजे, आर्यन क्लासेज, गली न.5, विष्वास नगर, पूर्वी दिल्ली, संयोजकः महेष भार्गव–9711086251
29. शनिवार, 19 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कुल, करनाल, हरियाणा,संयोजकः अजय आर्य–9416128075
30. शनिवार, 19 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,निधि पब्लिक स्कुल,भारत नगर, फरीदाबाद
31. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे,संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद,संयोजकः प्रवीन आर्य– 9911404423
32. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे,टीनु पब्लिक स्कुल,संगम विहार,दक्षिण दिल्ली,संयोजकः रामफल खर्ब–9999162077
33. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,ग्राम नादौन,हाथरस,उ.प्र.
34. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज,देव नगर,मध्य दिल्ली, संयोजकः सुषील बाली–9811213138
35. रविवार, 20 अगस्त 2023, सायं 3 बजे,आस्था लेन न.2,ज्ञान खण्ड,इन्दिरा पुरम,उ.प्र.,संयोलकः यज्ञवीर चौहानः9810493055
36. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे,आर्य समाज, सैक्टर–15, फरीदाबाद, संयोजकः अंकित आर्य–9654822939
37. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 7.30 बजे,राजकीय उच्च विद्यालय, बिरौली,जीन्द,हरियाणा,संयोजकः सूर्यदेव आर्य–9416715537
38. रविवार, 20 अगस्त 2023,प्रातः 9 बजे,आर्य समाज,जानीपुर कालोनी,जम्मू, संयोजकः रूही बब्बर–9596869072
39. बुधवार, 23 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,रोटरी पब्लिक स्कुल, सैक्टर–19, फरीदाबाद,संयोजकः वीरेन्द्र योगाचार्य–9350615369
40. वीरवार, 24 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,श्रीराम पब्लिक स्कुल,खेड़ी कलां,फरीदाबाद
41. शनिवार, 26 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे,न्यू जान एफ कैनेडी पब्लिक स्कुल,पल्ला,फरीदाबाद, विद्या भूषण आर्य–9999108200

आयोजन समिति–यशोवीर आर्य (9312223472), महेन्द्र भाई (9013137070), ओम सपरा (9818180932), गवेन्द्र शास्त्री (9810884124), देवेन्द्र भगत(9958889970), दुर्गेश आर्य (9868664800), रामकुमारसिंह आर्य (9868064422), धर्मपाल आर्य (9871581398), अरूण आर्य (9818530543), वेदप्रकाश आर्य (9810487559), हरिचन्द स्नेही (8168715284), सौरभ गुप्ता (9971467978)

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

की

200वीं जन्म जयन्ती

के अवसर पर

स्वामी अग्निवेश जी

स्वामी इन्द्रवेश जी

विशाल आर्य महासम्मेलन

23 सितम्बर, 2023 शनिवार (शहीदी दिवस)

खटकड़ टोल, जिला-जीन्द (हरियाणा)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सान्निध्य
प्रो. विट्ठलराव आर्य जी
मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सान्निध्य
पं. मायाप्रकाश त्यागी जी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

अध्यक्ष
स्वामी रामवेश जी
महर्षि दयानन्द द्वि जन्म शताब्दी आयोजन समिति

इस विशाल आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों, आर्य सन्यासियों, आचार्यों, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आर्यवीरों, आर्य वीरांगनाओं, आर्य नेताओं एवं राजनेताओं, खाप नेताओं, किसान नेताओं तथा शिक्षक नेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। आप सभी से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनायें।

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

दलबीर आर्य, अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा
सज्जन राठी, कार्यकारी अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा
अशोक आर्य, प्रदेश महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा
पूनम आर्या, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान
प्रवेश आर्या, राष्ट्रीय अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद्
मुकेश आर्या, प्रदेश अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद्
रणधीर रेढू एडवोकेट, उपाध्यक्ष, आयोजन समिति
स्वामी आदित्यवेश, मुख्य संयोजक, विशाल आर्य महासम्मेलन
स्वामी विजयवेश, संयोजक, विशाल आर्य महासम्मेलन

चौ. अजीत सिंह, पूर्व विधायक
रामनिवास आर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजदेव आर्य, प्रदेश उपाध्यक्ष
जयपाल आर्य, प्रदेश उपाध्यक्ष
अजयपाल आर्य, प्रदेश उपाध्यक्ष
ऋषिराज शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष
प्रि. आजाद सिंह, राष्ट्रीय उपमंत्री
हरपाल आर्य, प्रान्तीय कोषाध्यक्ष
प्रदीप कुमार, प्रदेश प्रवक्ता
रणबीर एडवोकेट, प्रवक्ता नरवाल खाप

जिला आयोजन समिति

सतबीर पहलवान, खेड़ा खाप, सतबीर सिंह, सरपंच खटकड़, अनिल आर्य, नरवाना, देवेन्द्र सहारण, जुलानी, जगफूल ढिल्लों, संगठन मंत्री, रणबीर बूरा, घोगड़िया, धर्मबीर सरपंच, गोईयां, केवल सिंह आर्य, जुलानी, आचार्य सूर्यदेव, जीन्द, सत्यवान कौशिक, दूर्जनपूर, टेकराम सरपंच, छात्तर, महासिंह सरपंच, कौथ कलां, इन्द्रजीत आर्य, नरवाना, धुलाराम आर्य, थुआ, अजीत गौतम, जीन्द, दयानन्द आर्य, अहीरका, सूरजमल आर्य, खटकड़, डॉ. राजपाल आर्य, जाजवान, प्रो.धर्मबीर, डूमरखां, कर्णसिंह रेढू, जीन्द, रणबीर राठी, जीन्द, स्वामी मुक्तिवेश, विरेन्द्र पहलवान, कर्मपाल आर्य, खटकड़।

आयोजकः

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक)

सम्मेलन कार्यालय : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705 अर्बन स्टेट जीन्द।

9467125438, 9416086348, 7015259713, 8708847583

आर्य समाज के सिद्धान्तों का आधार वेद है।

- डॉ. कृष्ण लाल विश्वनीड़

मुख्य रूप से आर्य समाज के सिद्धान्त वेद पर ही आधारित हैं। यद्यपि आर्य समाज के दस नियमों में से तृतीय नियम ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' परन्तु मोटे तौर पर देखा जाये तो अन्य सभी सिद्धान्त और नियम वेद पर ही आधारित हैं।

मनु ने स्पष्ट उद्घोष किया है कि ''मनु ने जिस किसी का भी कोई धर्म (कर्त्तव्य आचार) बताया है, वह सब वेद में उल्लिखित है क्योंकि वेद सभी ज्ञान से युक्त है।''

यः किश्चत् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।

(मनुस्मृति 2.7)

आर्य समाज के सिद्धान्तों के वेदाधारित होने का तर्क यह है कि वेद किसी व्यक्ति या सम्प्रदाय का अनुसरण नहीं करता। वेद निष्पक्ष है। उसकी दृष्टि सर्वव्यापक है। आर्य समाज के प्रथम नियम के अनुसार सब विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। इस विषय में ऋग्वेद के पुरुषसूक्त (10.90) का निम्नलिखित मंत्र स्मरणीय हैः-

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जाज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।

(ऋ. 10.90.8)

वेद सभी ज्ञान का आधार है और उसकी उत्पत्ति पुरुष (परमेश्वर) से ही होती है। आर्य समाज की मान्यता के अनुसार वह निराकार, पवित्र, सर्वशक्तिमान, स्वयंजन्मा, न्यायकारी है। ईश्वर के स्वरूप वर्णन के लिए यजुर्वेद (40.8) का निम्नलिखित मन्त्र पर्याप्त हैः-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धपाप विद्धम।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथतश्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

इस एक मन्त्र में ईश्वर की पूर्ण व्याख्या हो जाती है। वह सर्वव्यापक है, देदीप्यमान है। उपनिषदों में भी कहा गया है कि वह द्युतिशील है, सब कुछ प्रकाशित करता है, उसके प्रकाश से ही सब कुछ प्रकाशित होता है ''तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।''

वह अशरीर (अकाय) और इसलिए अव्रण (घावरहित) है। उसमें सामान्य जीव-जन्तुओं के समान नाड़ियां नहीं होतीं (अस्नाविरम्) इसलिए वह नाड़ीगत विकारों से रहित अर्थात् पूर्णतया निर्विकार है। वह परमेश्वर पूर्णतया शुद्ध है और उसमें किसी पाप से मानसिक क्षति भी नहीं है।

वह कवि (क्रान्तदर्शी) और मननशील है। इसलिए सबके प्रति पूर्ण न्याय करने में वह समर्थ है। अथर्ववेद (4.16.2) में उल्लेख है कि दो व्यक्ति बैठकर (किसी अन्य के विषय में) जो मन्त्रणा करते हैं ईश्वर (व्यापक वरुण) उसे जान लेता है और न्यायाधीश के समान उचित दण्ड देता है (द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः)। इस प्रकार क्रान्तदर्शी होकर वह श्रेष्ठ न्यायाधीश के समान यथायोग्य न्याय करता है।

वह परिभूः (सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी) है। वह स्वयंजन्मा (स्वयम्भू) है। उसका किसी अन्य से जन्म नहीं होता। इसलिए वह अनादि है और उसकी उत्पत्ति की कोई तिथि या स्थान या समय नहीं। वह सारे संसार का नियन्ता है। इसीलिए उचित योजना के अनुसार आने वाले शाश्वत वर्षों के लिए उसने सम्पूर्ण विश्व की समुचित व्यवस्था कर दी है। कोई यह नहीं कह सकता कि किसी समय में यह व्यवस्था समाप्त हो जायेगी। सृष्टि की रचना पूर्ण वैज्ञानिक है। और विज्ञान के नियमों के अनुसार गति करती है। इसी आधार पर वेद के नियम अटल हैं। वेद विज्ञान-सम्मत हैं। वहां कहीं भी चामत्कारिक क्रियाएं नहीं मानी जातीं। सभी ग्रहों की गति निश्चित नियमित हैं। इस नियमित गति के कारण अनेक वर्षपूर्व भी ग्रहों की भावी घटनाओं के विषय में बताया जा सकता है।

आर्य समाज इसलिए सत्य को अपनाने पर विशेष बल देता है। अनेक सम्प्रदायों में बहुत सी झूठी बातें प्रचलित हैं। इन बातों का कहीं कोई आधार नहीं है। केवल कपोल-कल्पित धारणाओं के अनुसार अथवा परवर्ती ''निर्णय-सिन्धु'' जैसे आचार ग्रन्थों के बहकावे में आकर बहुत सी निराधार बातें मानकर सामान्यजन धार्मिक (?) क्रियाओं का अनुष्ठान करते हैं। इसके विपरीत यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्म का अनुष्ठान करने वाला सत्याचरण की प्रतिज्ञा करते हुए मन्त्र बोलता है- इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि (यजुर्वेद 1.5)।

आर्य समाज सबकी उन्नति और रक्षा का परिपोषक है। वेद भी मनुष्य मात्र की रक्षा का निर्देश देता है। मनुष्य सब ओर से मनुष्य की रक्षा करे- पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः (ऋ. 6.75.14)।

आर्य समाज केवल अपनी उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होता। उसके लिए कल्याणमार्ग वही है जो सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग है उसी का अनुसरण सब करें-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽध्नता जानता संगमेमहि।।

(ऋ. 5.51.15)

सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग ऐसा है जिसमें सबका कल्याण होता है। सूर्य वर्षा और उष्णता का बहुत बड़ा कारक है और चन्द्रमा सब औषधि वनस्पति को फल से पूर्ण करता है। इसी प्रकार हमारा संयोग भी दाता, ज्ञानी और अहिंसक जनों से हो। समग्र समाज की उन्नति इन गुणों से ही परिपुष्ट होती है। प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान के मार्ग पर चले, अविद्या को छोड़े तो सबकी उन्नति सम्भव हैं अज्ञान का नाश समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। ज्ञानी जनों से संगति के द्वारा ही ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है। सब अज्ञान अथवा आरोपित तथाकथित ज्ञान को छोड़ें तभी सत्य ज्ञान का मार्ग मिलता है। इससे ही वास्तविक उन्नति सम्भव है।

वेद के अनुसार समाज के सभी व्यक्ति मिलजुल कर सौहार्दपूर्वक रहें, एक दूसरे की सहायता करें। आर्य समाज का उद्देश्य भी ऐसे ही समाज की रचना है- मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे (यजुर्वेद 36.18)

इस मित्र भाव के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति सब प्राणियों के दर्शन अपने आपमें करें किसी को अपने से अलग-पराया न समझें। उसी स्थिति में अपने-पराये के भेद का सन्देह दूर होता है, तभी सब में एक आत्मतत्व के दर्शन कर मनुष्य सबका सहायक हो जाता है-

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततोन विचिकित्सति।।

(यजु. 40.6)

फिर उनके मन से अपने-पराये का सन्देह दूर हो जाता है। आर्य समाज आरम्भ से संन्यास का पोषक नहीं है। आर्य परम्परा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को क्रमशः ब्रह्मचर्याश्रम में विद्या ग्रहण करनी चाहिए, तत्पश्चात् विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

गृहस्थाश्रम में पत्नी के लिए निर्देश ध्यान देने योग्य हैं:-

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।। (अथर्व 14.2.26)

हे स्त्री, तू श्वसुर आदि वृद्ध गृहस्थजनों के लिए सुखदायी हो, पति तथा अन्य गृहस्थों के लिए सुखदायक हो, अन्य सभी व्यक्तियों के लिए सुखप्रद हो और सभी की पुष्टि करने वाली हो।

आर्य समाज वेद के अनुसार ही स्त्रियों को विद्याध्ययन का समान अधिकार देने का पक्षधर है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त (11.5.18) में कन्या द्वारा ब्रह्मचर्य पालन के द्वारा विद्याप्राप्ति के पश्चात् अनुकूल वर प्राप्त करने की इच्छा जताई गई है-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।

वेद की भाषा संस्कृत है और संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं का प्रबल संयोजक सूत्र है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज के द्वारा स्थान-स्थान पर गुरुकुलों की स्थापना की गई। इनसे अनेक वेद के विद्वान निकले जिन्होंने वेद पर अनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखे। इसके अतिरिक्त सामान्य शिक्षण-संस्थाओं में भी आर्य समाज संस्कृत अध्यापन की आवश्यकता समझता और समुचित व्यवस्था करता है। यहां मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्य समाज को अपने स्कूलों में कुछ अधिक धन लगाकर भी बारहवीं कक्षा तक संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का योगदान अत्यन्त व्यापक और महत्वपूर्ण है। इसने अन्धविश्वास दूर करने में भी सहयोग दिया है।

आर्य समाज सबका हितचिन्तक है और सबका हित सिद्ध करना इसका मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज की संस्थाओं में सबके साथ समान व्यवहार होता है वहां योग्यता और देश-धर्म के प्रति निष्ठा को प्रमुख माना जाता है। मानव उन्नति का लक्ष्य आर्य समाज और इसकी संस्थाओं में प्रमुख है।

आर्य समाज वेद का अनुसरण करता हुआ यह चाहता है कि उन्नत, कल्याणप्रद विचार सब ओर से हमारे पास आएं-

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः। (यजुर्वेद 25.14)

- 937, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034

''ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने ..''

- राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

ऋषियों का यह देश हमारा, पावन परम यहां की माटी।
अनुगामी होना वेदों का, रही यहां की परिपाटी।।
आदिकाल में यहां सृष्टि के, दिया ईश ने अनुपम ज्ञान।
अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, हुए प्रथमतम ज्योतिर्गान।।
ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक, ऋषियों ने कर वेद प्रचार।
भू के हरे भरे उपवन में, रहे खिलाते मृदु अभिसार।।
रही व्यवस्था धर्म सुवैदिक, युद्ध महाभारत से पहले।
उसके बाद धरणि के वासी, वेदों का पथ छोड़ चले।।
विगत सदी में एक महाऋषि, पुनः पधारा भारत भू पर।
अपौरुषेय वेदों के ज्योतित पथ पर स्वयं अभय चल कर।।
'सत्य सनातन धर्म वेद का' है, उसने उद्घोष किया।
परमेश्वर की वाणी शुचितम का ऋषि ने जयघोष किया।।
वेदोद्धारक वह महर्षि था, ऋषिवर दयानन्द संन्यासी।
वेदों के पावन प्रचार का, ही वह सदा रहा अभिलाषी।।
ईश्वरोक्त हैं चतुष्वेद ही, स्वामी जी ने हमें बताया।
वेदों का कर भाष्य स्वभाषा, भ्रान्ति अनेकानेक मिटाया।।
फैले वेदों का प्रकाश फिर, एक यही थी उसकी इच्छा।
अनुगामी हों हम वेदों के, यही दयानन्द ने दी शिक्षा।।
किया अहिर्निश वेद ज्ञान का, उसने दिव्य प्रचार निरन्तर।
लगी गूंजने महिमण्डल में, वेद ऋचाएं स्वर्गिक सत्वर।।
दे करके दृष्टान्त वेद का, पाखण्डों को था ललकारा।
फैली थीं जो दुष्प्रवृत्तियां, उन पर कटुतम चला दुधारा।
सायण तथा महीधर के कलुषित भाष्यों को त्याज्य कहा।
ईश्वर जीव प्रकृति सम्बन्धित सुलझ गईं गुत्थियां महा।।
जाग्रत किया आर्य सुसंस्कृति, कर वैदिक मत का प्रतिपादन।
स्वार्थ युयुत्सा लीन मतों का, छोड़ दिया जन ने अनुपालन।।
'वेद मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है', ऋषिवर ने की सिंह गर्जना।
धरती के सारे पाखण्डी, वेद ज्ञान पर हुए अनमना।।
हुए प्रकम्पित जगती भर के, मिथ्याधारित मत-मतान्तर।
वेदों का पावन प्रकाश पा, हुआ प्रकाशित जन-जन अन्तर।।
सत्य मार्ग के इस दर्शन ने, मानवता का पाठ पढ़ाया।
ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने, वेदाऽमृत का पान कराया।

- मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, (उ. प्र.)

चिन्ता को चिन्तन से जीतें

– आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

वर्तमान समय में चिंता एक बड़ी समस्या बनी हुई है। मानवीय स्वभाव में चिंता लगातार प्रज्ज्वलित है। चिंता की ज्वाला दावानल का रूप लेकर व्यक्ति के स्वास्थ्य शांति और सुकून को भस्म कर रही है। आज का मनुष्य तनाव अवसाद से ग्रसित होकर रक्तचाप मधुमेह जैसी बीमारियों के चुंगल में आ गया है। वर्तमान में जिसे हम लाइफस्टाइल कहते हैं वह हमारी बहुत सी समस्याओं का कारण है। जब लाइफस्टाइल की बात आती है तो भौतिक रूप से बाहरी कारणों पर नजर डालता है। वह अपने उठने, खाने, सोने, जगने पर बात करने लगता है। यह भी लाइफस्टाइल का हिस्सा है, किंतु हमारा सोचने का ढंग किसी भी विषय पर प्रतिक्रिया करने का तरीका और व्यवहार भी जीवन का या लाइफस्टाइल का एक अभिन्न अंग है। अगर आप हर बात पर त्वरित प्रतिक्रिया करेंगे तो उस समय आपका रक्तचाप बढ़ने लगेगा। हम सभी को अपने चिंतन में यह बात लानी चाहिए शांति और सुकून हम किसी से मांग कर नहीं ले सकते। इसके लिए हमें स्वयं की मनःस्थिति को बदलना होगा। चिंता एक बड़ी बीमारी है जो अपने संग टेंशन, डिप्रेशन, ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी अनेक बीमारियों की जननी है। इस बात पर इशारा करते हुए आचार्य चाणक्य ने लिखा है –

चिता, चिन्ता समाप्रोक्ता बिंदुमात्रं विशेषता।
सजीवं दहते चिंता निर्जीवं दहते चिता।।

चिता और चिन्ता को एक समान समझते हैं, किंतु यह सच नहीं है। चिंता, चिता से बड़ी है क्योंकि चिता निर्जीव व्यक्ति को जलाती है और चिन्ता सजीव जीवित व्यक्ति को जला देती है।

चिन्ता को चिन्तन से जीता जा सकता है। मन का कार्य ही है सोचना। किंतु कई बार हम स्वयं के बारे में न सोच कर दूसरों के बारे में सोचते हैं। यह ज्यादा सोचते हैं कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं? इस पर व्यंग्य करते हुए किसी ने लिखा है लोग क्या सोचेंगे यह भी अगर हम सोचेंगे तो फिर वह क्या सोचेंगे? हम सभी को अपना जीवन, अपना व्यवहार, अपना स्वास्थ्य, अपनी मुट्ठी में रखना चाहिए। अपने सुकून की चाबी कभी दूसरों के हाथों में नहीं रखनी चाहिए। चिता और चिन्ता में मात्र 1 बिंदु का अंतर है किंतु इसका स्वभाव और गुण एक दूसरे से बहुत अलग है। चिंता आपको नकारात्मकता देकर अंधेरे में धकेल देती है जबकि चिंतन आपको सकारात्मकता देकर जीवन को दिशा देने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए चिंता को चिंतन से ही जीता जा सकता है। गीता का सार भी यही है। कर्म को करने में समय और ऊर्जा लगाइए। उसका फल मुझे तुरंत नहीं मिला कब मिला इस बात की चिंता करनी छोड़ देनी चाहिए। यही ईश्वर की ओर बढ़ने का एक मार्ग है।

प्राचीन समय में एक राज्य भयंकर अकाल से पीड़ित हो गया था। जिसके कारण राजा को बहुत नुकसान का सामना करना पड़ा, न तो उसे कर मिला और न ही जनता से लगान। अब राजा इस बात से चिंतित रहने लगा कि व्यय को कैसे कम किया जाए, ताकि राज्य का काम बिना किसी परेशानी के चलता रहे।

साथ ही राजा इस चिंता में भी था कि भविष्य में अगर फिर कोई ऐसा अकाल पड़ गया तो पड़ोसी देश के राजा हमला भी कर सकते हैं। राजा ने एक बार अपने ही मंत्रियों को राज्य के विरुद्ध षडयंत्र रचते हुए भी पकड़ा था।

इन सभी चिंताओं की वजह से राजा को नींद भी नहीं आ रही थी और न ही उन्हें भूख लगती थी।

राजा के शाही बाग का एक माली था, राजा रोज उसे देखता था, वह प्याज–चटनी के साथ पेट भरकर भोजन ग्रहण करता था और खुश रहता था।

राजा के एक गुरु थे, उन्होंने राजा से कहा अगर तुम वाकई मुझे अपना गुरु मानते हो तो यह राजपाठ मुझे सौंप दो, तुम महल में रहो, सिंहासन पर बैठो और एक कर्मचारी की भांति मेरे राज्य का ध्यान रखो। मैं तो साधु हूं और आश्रम में ही रहूंगा लेकिन तुम्हें मेरे लिए यह काम करना होगा।

राजा ने उनकी बात मान ली और खुशी–खुशी एक कर्मचारी की भांति राज्य का ध्यान रखने लगे। काम तो वही था लेकिन अब राजा को किसी जिम्मेदारी या चिंता में लदा हुआ नहीं था। कुछ महीनों बाद उसके गुरु आए। उन्होंने राजा से पूछा कहो तुम्हारी भूख और नींद का क्या हाल है। राजा ने कहा कि मालिक अब खूब भूख भी लगती है और मैं चैन की नींद सोता भी हूं।

गुरु ने राजा को समझाया कि बदला कुछ भी नहीं है, जो काम पहले तुम्हारे लिए बोझ था, वह अब तुम्हारा कर्तव्य बन गया था। हमें ये जीवन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए मिला है। किसी चीज को अपने ऊपर बोझ की तरह लादने के लिए नहीं। चिंता करने से परेशानियां बढ़ती हैं इसलिए ज्यादा सोचना नहीं चाहिए।

एक बार एक आदमी अपने दोस्त से पूछा कि रात को मच्छर काटे और खुजली हो तो क्या करना चाहिए ? उस व्यक्ति ने बड़ा सीधा सा जवाब दिया उसने कहा चुपचाप सो जाना चाहिए मच्छर को मारना चाहिए और सो जाना चाहिए। क्योंकि आप रजनीकांत तो हो नहीं मच्छर से सॉरी बुलवा लोगे। सारी समस्या इस बात पर है कि हम स्वयं को रजनीकांत कब नहीं समझते। और पूरी दुनिया को सॉरी बुलवाने में लगे रहते हैं।

मैंने अपनी जिंदगी को कुछ इस तरह आसान कर लिए।

किसी से माफी मांग ली, किसी को माफ कर दिया।।

चिंता ऐसी डाकिनी काट करेजा खाए वैद्य बेचारा क्या करें कहां तक दवा खवाए।।

– फ्लैट नम्बर सी 1 पूर्ति अपार्टमेंट विकासपुरी
नई दिल्ली –110018
मो. 9810084806

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपयें में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
'दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :– 011–42415359, 23274771

पृष्ठ 1 का शेष

श्रावणी पर्व पूरे जोश एवं उत्साह पूर्ण वातावरण में मनायें

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान भी किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

7 सितम्बर, 2023 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगीराज श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे योगीराज श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

7 जुलाई, 2023 को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्बोधन रहा

7, 8, 9 जुलाई, 2023 भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह गुरुकुल पौंधा देहरादून (उत्तराखंड) में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज एवं सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी महाराज एवं श्री राजकुमार आर्य बंगलौर की अध्यक्षता में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूरे कार्यक्रम की सुव्यवस्था बड़ी तन्मयता के साथ गुरुकुल के आचार्य धनंजय जी और उनके समस्त आचार्यों ने मिलकर की। उनकी तथा उनके साथी आचार्यों की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। पूरे कार्यक्रम का संचालन परिषद् के महामंत्री डॉ. कैलाश "कर्मठ" कोलकाता ने किया। परिषद् के सम्मेलन में लगभग 120 भजनोपदेशक एवं 300 श्रोतागण शामिल हुए।

सम्मेलन के दौरान पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज का जन्मदिन 7 जुलाई, 2023 को सभी ने मिलकर बड़े ही धूमधाम से मनाया।

इस अवसर पर सभी भजनोपदेशकों, दर्शकों को सामवेद, शॉल एवं दिनचर्या में आने वाली सामग्री का किट भेंट किया गया। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज द्वारा 4 वयोवृद्ध भजनोपदेशकों का अभिनंदन किया गया जिनके नाम उल्लेखनीय हैं – 1. श्री ओम प्रकाश आर्य भजनोपदेशक, 2. श्री इंद्रदेव पीयूष भजनोपदेशक, 3. श्री विक्रम देव जिज्ञासु भजनोपदेशक, 4. श्री पंडित सुरेंद्र पाल आर्य भजनोपदेशक।

सम्मेलन में यह भी निश्चित किया गया कि वर्ष 2024 में निम्न महानुभावों का सम्मान किया जायेगा। जिन महानुभावों का नाम तय किया गया वे निम्न प्रकार हैं – 1. श्रीराम मुनि स्वामी संगीतानंद) जी मथुरा, 2. श्री महिपाल सिंह जी भरतपुर, 3. श्री वेद प्रकाश हरिद्वार, 4. श्री हरीश चंद्र जी गाजियाबाद, 5. श्री नरदेव आर्य भरतपुर।

इस अवसर पर पूरे देश से आए हुए आर्य भजनोपदेशकों एवं भजनोपदेशिकाओं के सुमधुर भजनों की प्रस्तुति हुई। इस कार्यक्रम में सभी आर्य भजनोपदेशकों ने संकल्प किया कि महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयंती पर अपने भजन और उपदेशों द्वारा भारत के अंतिम व्यक्ति तक आर्य समाज की विचारधारा को पहुंचाने का कार्य करेंगे।

अंत में परिषद् के प्रधान श्री सहदेव बेधड़क एवं कोषाध्यक्ष पंडित नरेश दत्त आर्य ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों एवं आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

।।ओ३म्।।

मानव सेवा प्रतिष्ठान
सेवा हि परमो धर्मः
स्थापना : 1998 ई०
60-बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-44

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर

मानव सेवा प्रतिष्ठान
MANAV SEWA PRATISTHAN
60बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली–110029
का
रजत जयन्ती समारोह
SILVER JUBILEE CELEBRATIONS

दिनांक : 23 व 24 सितम्बर, 2023 (शनिवार एवं रविवार)
स्थान : गुरुकुल गौतम नगर,
(निकट ग्रीन पार्क मेट्रो स्टेशन) नई दिल्ली–49

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक :

चन्द्रदेव शास्त्री (प्रधान)
डॉ. कंवर सिंह शास्त्री (महामंत्री)
रामपाल शास्त्री (कार्यकर्ता प्रधान)

सम्पर्क सूत्र :
9810283782, 9868365727, 9416711417,
9999027992, 9968914743

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।